दिवाकरनन्दि सिद्धान्तदेव

जीवन-परिचय : दिवाकरनन्दि सिद्धान्तदेव भट्टारक चन्द्रकीर्ति के प्रधान शिष्य थे। ये सिद्धान्तशास्त्र के अच्छे विद्वान थे और वस्तुतत्त्व का प्रतिपादन करने में निपुण थे। दिवाकरनन्दि को सिद्धान्तरत्नाकर कहा जाता था। इनके शिष्य मुनि सकलचन्द्र थे।

दिवाकरनन्दि का समय 1077 ई. के लगभग बतलाया गया है।

रचना-परिचय : सिद्धान्तदेव ने तत्त्वार्थसूत्र की कन्नड़ भाषा में ऐसी कृति बनाई थी, जो बालकों तथा विद्वानों —दोनों को तत्त्वज्ञान करानेवाली थी।